A JOURNEY

FROM

SEHORE TO BOMBAY,

IN A SERIES OF LETTERS

TO HIS FRIENDS.

BY

PUNDIT RUTUNASHUR,

OF SEHORE.

PUBLISHED UNDER THE AUTHORITY

OF THE

AGRA SCHOOL-BOOK SOCIETY.

AGRA PRESS

1841.

पत्र मालिका

सीहोर निवासी

पंडित रत्नेश्वरजी ने सीहोर से ले

बंबई तक याचा करने में जो जो बड़े नगर और

अच्छे अच्छे पदार्थ देखे उन का

पत्रद्वारा वर्णन कर उस का नाम

पत्रमालिका धरा

सो आगरा स्कूल

बुक सोसईटी की आज्ञा

से छापी गई

---

२९ मई संवत् १८४१ ईसवी

Printed by

Order of the Committee:

J. J. Moore,

Secy.

1st Ed. 5,00 *Copies.*

॥ पहला पत्र ॥

॥ वेदशास्त्र संपन्न राजमान्य ॥

॥ राजश्री ओंकार भट्टजी ॥

जोग लिखी बंबई से रत्नेश्वर का नमस्कार बंचना आगे हम प्रसन्न हैं, आप की प्रसन्नता के समाचार आवें तो परमानंद हो; आपने चलते समय कहा था कि हमको बंबई आदि नगरों का बर्णन और बिद्यावान् लोगों से मिलने के समाचार और पाठशालाओं का बर्णन लिखना; सो आप के कहने के अनुसार जो जो स्थान हमने देखे उनका ब्योरा लिखते हैं ॥ हमने भूपाल से चलकर हुसंगाबाद देखा, वह नगर नर्मदा के तट पर बसता है, उसके बाजार में कई दुकान साहूकारों की सुंदर बनी हुई

हैं; और नर्मदा का घाट बासली साहिब का बनवाया ऊआ रामचंद्र के देवल के समीप बऊत रमणीक हो रहा है; जहां कि नगर के नर नारी आकर नर्मदा के नीर से स्नान, पान, पूजन करके आनंद पाते हैं, और उस नगर का गढ़ नदी के तीर पर बनाऊआ था अब उसकी केवल एक भींत नदी की ओर की शेष रही है; और उस नगर के पूर्व की ओर एक मील पर बड़े साहिब की कोठी रमणीक प्रफुल्लित बगीचे में बनी ऊई है, उसके निकट एक पलटन पड़ी ऊई है; फिर वहां मेजर विन्फील्ड साहिबने संग लेजाकर मेजर जानरिफ बासली प्रिंसिपल असिष्टंट साहिब से मिलाप कर वाया; उस साहिबने बिलायती गाय और बैल दिखलाये, उन गायों की अद्भुत रीत देखने में आई कि उनके अंग पर बाल बड़े बड़े, और शब्द सिंह का सा सुन्ने में आया, इनके भिन्न और भी देश देश के गाय और बैल भांति २ के देखे, और बड़े साहिबने हमको संग लेजाकर बगीचा दिखाया वह बिलायती मेवा और फूल फलों से रमणीक होरहा है, नारियल सुपारी रबर आदि

वृक्षों से भरा हुआ है; रबर वृक्ष वह है कि जिसके गोंद से कागज पर पिन्सल के लिखे हुए अक्षरों को मिटा देते हैं, उस बगीचे की शोभा देखने से ही बनआवे, उस के सुधारने में कई सहस्र रुपैये लगे हैं; यह देख फिर हमनें जाकर माधव राव गुरू की पाठशाला देखी और लड़कों की परीक्षा ली, किसी २ लड़केने हिसाब, भूगोल में उत्तर दिया, परंतु यहां के लोग माधवराव सरीखे बुद्धिवान् को पाकर भी अपने लड़कों को हिसब छोड़ कर और कोई विद्या पढ़ने का चाव नही कराते; फिर वहां से चलकर हरदास्थान देखा फिर वहां से चले पंद्रह १५ कोस पर, हरसोद गांव मिला, वहां सरस्वती नदी करके एक छोटासा नाला है, उस के तीर एक बगीचे में पांच मंदर पुराने हैं उन्हें में महादेव के मंदर के सभा मंडप में एक पत्थर पर संस्कृत बीजक १२७५ के संवत् का लिखा हुआ है, उस में यह है कि धारा नगरी के देवपाल देवराजा के समय में केशव नाम बनियेने ये देवालय बन-वाये हैं, और उस गांव के जमीदार लोग कहते

हैं, कि ये स्थान राजा हरिश्चंद्र के हैं और उन्हों के बनवाए ऊए मंदिर हैं, परंतु वहां उन्हों का कुछ चिन्ह भी नही है, वह गांव हरदेव का है और उस बीजक की प्रति बड़े साहिब के पास भेजी है, सो आप भी देखना ; उस गांव से आगे पांच कोस पर सिंगाजी है, वहां जाकर ठहरे और उस दिन मार्ग में झाड़ी आई और एक तवा नदी उसी जंगल में मिलती है, वहां मार्ग भी लुटता है, और मनुष्य भी मारे जाते हैं, वह स्थान सेंधियाके राज्य में है, वहां बटोही बड़ा दुख पाते हैं, इस से जान पड़ता है कि उनके राज्य में कुछ प्रबंध नही ॥ सिंगाजी में देखा कि सिंगाजी की छत्री बनी ऊई है, और बरसवेदिन वहां बडी जात्रा लगती है वह साधु जात का गूजर था और संवत् १८१६ में उत्पन्न ऊआ था वह गांव मंडलेश्वर के इलाके में है फिर वहां से खुड़वे को गये, वहां दे। स्थान में मंडलेश्वर के साहिब की ओर से चार पंडित लड़कों को पढ़ाते हैं; तहां देखने में आया कि निमाड़ी और महाजनी हिसाब के भिन्न और कोई विद्या कुछ नही जान्ते; बालाजी शास्त्री से भी मिले

फिर असेर पहुंचे उसके दोनों ओर झाड़ी बड़ी भयंकर है, और छावनी की पाठशाला में मरहटी और निमाड़ी की छोटी पुस्तकें पढ़ाते हैं और भूगोल का नकशा भी है, परंतु समझते नही हैं और वहां प्राचीन टूटे हुए बादशाही महल देख के नगर को देखा तो गांव के समान दृष्ट आया, और पहाड़ पर गढ़ है, सो जाकर देखा, उसके सात द्वार हैं और तीन कोट आस पास फिरे हुए हैं; गढ़ की चढ़ाई आध कोस की है, और पानी गढ़ में बहुत है, कई टांके, और कुंड बावड़ी और तालाव भरे हुए हैं एक कुंड को अश्वत्थामा का कुंड कहते हैं वह तीर्थ के स्थान पर है उसी कुंड पर महादेव का मंदिर बना है, उनका नाम अश्वत्थामा है; और एक बादशाही मसजिद वहां बनी हुई है, और गढ़ के द्वार पर एक तोप है, सो वह संत्व १७११ की बनी हुई है, सो मरहटों की बनवाई हुई है।

और एक तोप दस हाथ की लंबी है उसे अब गणेश तोप कहते हैं वह महम्मदी संवत् १०७४ की बनी हुई है गढ़की चढ़ाई के मार्ग में द्वारके ऊपर पत्थर पर फारसी में बीजक खुदेहुए हैं; एकतो

सन् १००९ का अक्बर बादशाह के नाम का है, और सन् १०१९ का आलमगीर के नाम का है, और शाहजहां के नाम का है, और एक आजमशाह के नाम का ऐसे चार हैं: और अब अंग्रेज लोग पलटन सहित ऊपर रहते हैं॥ यह देख वहां से बुढ़ानपुर पहुंचे, वहां देखा ते तापी नदी नीचे बहती है, और बहुत से रमणीक घाट बंधे हुए हैं देवालय भी शोभित होरहे हैं नगर बहुत बड़ा है, द्वार रंगीन चारों ओर के बने हुए हैं; बजार से ले और मंडीलों शहजादे रहते हैं; कलाबत्तू का काम करनेवाले सहस्रों मनुष्य रहते हैं, चोक में फ़वारे चलते हैं, नहर सब नगर में फिरी हुई है, और सब भांति की मेवा से बजार सुगंधित होरहा है, महाजनों की दुकानों में जवाहरात की थैलियां भरी हुई रक्खी हैं, उसी बजार में एक पुरानी बादशाही मसजिद नामी बनी हुई है, और एक दूसरी जुम्मा मसजिद बादशाही संवत् १००९ की बनी हुई है, वह बहुत सुंदर है, उसमें फारसी बीजक भी लिखा है, और उसके १५ चसमें हैं और १६ खंभ और नगर में ३६ बजार हैं और उसके बाहर अनेक

बाग हैं; उसमें तूअर की दाल और पान अच्छे होते हैं, यहां भुसकुटे कृष्णराव माधव जमीदार रहते हैं जोकि हांडीये हरदे पर्गने आदि के हैं; मेजर साहिब के संग उनसे हमारा भी मिलाप हुआ उन्होंने सब भांति से सतकार किया, वे भी बहुत योग्य हैं॥ फिर वहां से धरन गांव गये तहां सरकारी पाटशाला है; राघोपंथ नाम पंडित हिसाब पढ़ाते हैं; और वहां उतरन साहिब की कोठी एक बहुत सुंदर है उसके एक कमरे में अनेक भांति के चित्र हैं; और एक कमरे में नाना प्रकार के जीव हैं जिनके चमड़ों में मसाला भरकर वैसाही सरूप बनाकर रक्खे हैं; और एक कमरा पत्थर के गलीचे से शोभायमान होरहा है जिस में हरे पीले और नीले पाषाण नग सरीखे जड़े हुए हैं॥ और एक दूसरी याम साहिब की कोठी देखी उस में अनेक भांति की चिड़ियां मसाले भरकर रक्खी हैं मानो जीती हैं ऐसी दीखती हैं और चित्र हालंड के लोगों के बहुत शोभायमान होरहे हैं॥ फिर वहांसे धुलिया पहुंचे वहां की पाटशाला में गणपतराव गुरु बंबई से आए हुए पढ़ाते हैं वहां मरहटी लिखना होता

है और दो एक लड़के दरामिल भी सीखते हैं॥ और नक्शा भूगोल खगोल का नही जानते; प्रथम के गुरु वसुदेव नाम के जिनके साथ मिलने से जान पड़ा कि नक्शा भूगोल खगोल का वे भी नही जान्ते परंतु दरामिल, बीज गणित और त्रिकोण मिती जानते हैं; वहां कलकटर ब्रेन साहिब और लफ्टिनेंट इजनेर ग्रेम साहिब से भी सलाम हुई थी धुलिया गांव छोटा ही है, परंतु छावनी अच्छी है, और वहां से लगाकर सड़क अच्छी बनी है, और उतरने के सब ठिकानो पर बंगले साहिब लोगों के उतरने को बने हैं; फिर माले गांव में गये मार्ग के बीच झारगा गांव में महादेव का पुराना मंदिर उदेपुर के मंदिर के समान देखने में आया; माले गांव अच्छा है और गढ बहुत सुंदर बना हुआ है, और एक पलटन की छावनी रहती है वहां रघुनाथ जोतषी से मिले; फिर चांदोड पहुंचे बुढ़ानपुर से लगा कर चांदोड तक खान देश है, और मार्ग में श्रीयुत कंपनी का राज्य आता है और कोई २ गांव मर-हटों का भी मिलता है; चांदोड के घाट पर चढ़ना लगता है चांदोड में बाड़ा अहिल्या बाई का

बनवाया हुआ बहुत शोभायमान हो रहा है; फिर वहां से नाशिक जाना हुआ जहां गोदावरी निर्मल नीर से लहरे ले रही है, उसके उत्तर के तट पर पंचवटी बसती है, वहां रामचंद्र का देवल ओढ़ेकर का बनवाया हुआ लाखों रुपैये की लागत का बहुत सुंदर शोभायमान होरहा है ऐसेही रामेश्वर महादेव का देवल राजा बहादुर का बनवाया हुआ और रामचंद्र का मंदिर सुंदर बना है॥ और बहुतसे घाट और देवल एकसे एक अच्छे बने हुए हैं, और वहां पेशवा के पुराने बाड़े में पाठशाला है सो एक कमरे में लड़कियां लिखती पढ़ती हैं, और कसीदे का काम कई प्रकार का करती हैं; और दूसरे कमरे में पंथोजी लडकों को मरहटी और हिसाब आदि सिखाते हैं, तीसरे कमरे में पादरी स्टोन साहिब अंग्रेजी पढाते हैं; और एक दूसरे पादरी भी सिखाते हैं; लडके अंग्रेजी बहुत अच्छी पढते हैं क्योंकि सिद्ध पदार्थ और रसायन शास्त्र आदि की पुस्तक मरहटी में पढकर अंग्रेजी में उलथा करके अर्थ कहते हैं और नकशा भी अच्छा जानते हैं नाशिक नगर बहुत रमणीक है, वहां छोटे बड़त

अच्छे बनते हैं॥ फिर वहां से त्र्यंबक को गये वहां त्र्यंबकेश्वर का मंदिर नाना साहिब पेशवे का बनवाया हुआ है उस मंदिर के काम में लाखों रुपेये लगे हैं, उसका काम शक १६७० से प्रारंभ होके शक १७०९ में पूरा हुआ है, और एक कुशावर्त्त नाम करके गोदावरी का कुंड है; गोदावरी वहां ऊपर पहाड़ पर ऊमर के वृक्ष की जड़ से निकली है, पहाड़ पर जाने को ३५० सीढी खड़ी पत्थर में काट के निकाली हैं, सो यह सब देख फिर वहां से चलकर दो कोश पर मार्ग में देखा कि एक पहाड़ है, उसमें सात गुफा बनी हुई हैं सो देख आगे चले तो, उस स्थान से लगाकर अधिक नीची धरती मिलती है, परंतु सड़क बहुत चलती है, इसलिये कुछ वहां डर नहीं है फिर आगे भी भंडी पहुंच समुद्र की खाड़ी उतर थाने नगर में पहुंचे; वह बहुत अच्छा सुहावना लगता है, समुद्र की खाड़ी के तट पर गढ़ बहुत दृढ बना हुआ है और एक ओर तड़ाग लहर लेरहा है, जिसके तटपर कोकलेश्वर महादेव का मंदिर बना है और बजार भी प्रत्येक वस्तु से भरा हुआ है, वहां साहिब लोगों की

कोठी बहुत हैं, और गिरजा घर भी बने हुए हैं, उस से तीन कोस पर एक कानेरी नाम करके पहाड़ में गुफा पचास तो हमने गिनीं पर बहुत है कई स्थान में जैनियों की मूर्तें जान पड़ती हैं वहां कई साहिब लोग भी देखने आते हैं, यहां से लगाकर बगीचे और बंगले और पुल देखते हुए बंबई पहुंचे, वह नगर देखा सो बहुत मनोहर देखने में आया जिस में अनेक दुकानें घर नाना प्रकार के बने हुए हैं और गढ़ भी बहुत सुंदर है सो देखा और अब हम यहां रहकर सब स्थान देखेंगे आगे जो देखने में आवेगा सो तुम को लिखेंगे, और हम मेजर साहिब के संग होले होले चार कोस कभी पांच कोस और कभी सात कोस इस भांति दो महीने के बीच बंबई में आन पहुंचे और सीधे मार्ग इंदोर होकर या बुढ़ानपुर होकर एकही महीने का मार्ग है; छापा रखना तारीख १ महीना फरवरी संवत् १८३९ ईसवी ॥

॥ दूसरा पत्र ॥

हमने आपके कहने के अनुसार मार्ग का ब्योरा बिधपूर्बक लिखा है सो आप के पास पहुंचा होगा, अब बंबई का बर्णन करते हैं॥ वह नगर बहुत रमणीक, जहां भांति २ के स्थान बने हुए हैं, सड़कें नित २ पानी से छिड़की जाती हैं महाजनों की दुकाने मोती मूंगे और अशर्फियों से जगमगा रही हैं बजाजा बिलायती कपड़े से परिपूर्ण हो रहा है और साह्रकारों की दुकाने चित्रों से चित्र बिचित्र होरही हैं, रात में कंडीलों की ज्योत से जगाजोत लगी रहती है; ऐसेही गढ़ का भी बजार अनेक प्रकार की शोभा दे रहा है; गढ़ की पूर्ब और दक्षिण ओर नदी है, बुरज जिसके पानी में डूबेहुए हैं बंदरों पर सहस्रों नावें जहाज और किश्तियां और बंदर बोटें अनेक देशों से आई हुई अनेक भांति की सामग्रियों से भरी हुई हैं कई जहाज बिलायत से आये हुए गढ़ के निकट समुद्र में लंगर डाले हुए हैं जिन्हों पर गढ़ की सलामी की तोपें चल रही हैं, तिसी भांति

गढ़ पर की भी तोपें जहाज की सलामी को चलती हैं, दुर्ग में फारसी लोगों की कोठी ऐसी बनी हुई हैं, माने बड़े २ मनुष्यों के स्थान हैं जो नाना प्रकार की वस्तुश्रों से सुशोभित हो रहे हैं; ऐसे नगर की शोभा देखते ऊए दुर्ग के पश्चिमद्वार पर पहुंचे, जहां विलायत की बनी ऊई मरमर पत्थर की मूरतें रक्खी ऊई हैं, तिन में एक लार्ड गवरनर वलजली साहिब की मूरत श्रोर एक पहलवान की है, उन्हों के कपड़े पत्थर की बनावट में ऐसे निराले हैं कि माने सचमुचके पहरे ऊए हैं; उन्हों के पास दो सिंह बनाये हैं श्रोर गढ़के भीतर बड़े स्थान में जहां लार्ड साहिब आकर कैांसल के लिये बैठते हैं, उसी घर में अंग्रेजी श्रोर शास्त्र की पाठशाला है, वहां सब लड़के अंग्रेजी पढ़ने को नित्य आते हैं, वहां पुस्तकालय भी है, श्रोर प्रत्येक देश से आये ऊए बीजक के भी पत्थर रक्खे ऊए हैं, उसी घर में गवरनर मैलकम साहिब श्रोर जनरल अल्पिष्टन साहिब की मूरत पत्थर की विलायत से मंगवाकर रक्खी है, उन्हों की सुंदरता लिखने में नही आती, श्रोर इसी रीत की श्रोर भी तीन

मूरतें उसी स्थान के बीच बाहिर एक छत्री में खड़ी हैं जिन्हों में एक मूरत लार्ड कार्नवालिस साहिब की है॥ फिर तोप खाना देखा, सो सहस्रों तोपें चरख से नीचे पड़ी ऊई हैं; श्चैार सैंकडों बड़ी तोपें दुर्ग पै भी चढी ऊई हैं, गोलों के ढ़ेर लगे ऊए हैं, श्चैार बारूदखाना भरा ऊश्चा है; उस समय देखने में श्चाया कि लडाई की सामग्री जहाजों पर चढकर काबुल की श्चोर जाती है॥ फिर छापेखाना देखा, सो श्चच्चरों के छापे खाने में शीशे के श्चच्चर बने ऊए हैं, श्चैार सब श्चलग श्चलग रक्खे ऊए हैं, उन्हों को एक पट्टी में उलटी पंक्ति की पंक्ति पच्चके समान जमाकर फिर उस पर स्याही लगाकर उस पर कोरा कागज रखकर प्रेस यंत्र मं दबाते हैं तो सूधे श्चच्चर ऊपर श्चाते हैं; श्चैार पत्थर के छापेखाने में श्चच्छे लेखक के श्चच्छे श्चच्चर छापे के मसाले की स्याही से पत्र पर लिखकर फिर उस पत्र को उलटा सिल पर डाल प्रेस यंत्र में दबाते हैं तो उलटे श्चच्चर पत्थर पर उखड़ते हैं; फिर रोल की स्याही विलायती काजल जवासे के तेल से घुले ऊए को बेलन से लगाकर

उन्हों पर फेरते हैं और सील्हा ऊआ कोरा पत्र ऊपर डाल यंत्र में दबावते हैं तो सब अक्षर सीधे उस पत्र में उखड़ आते हैं इस भांति हिंदी, फारसी, और अंग्रेजी आदि सब प्रकार की पुस्तकें छापी जाती हैं; देखो आगे हाथ से पुस्तक लिखने में कितना परिश्रम होता था, और दाम भी बऊत लगते थे तो भी सब प्रकार की पुस्तकें न मिलती थीं; अब छापा होने से थोड़े से मोल में जितनी पुस्तकें चाहियें दीन लोगों को भी मिलने सकती हैं, और यह छापा ऐसे उपकार का है तो भी अपने इधर के सिंधे, ऊलकर, और राजगढ, नरसीगढ, और खिलची पुर के राजालोग और भूपाल के नबाब साहिब मंगवाकर प्रारंभ नहीं करते सो बड़े आश्चर्य की बात है; देखो जिसके यहां छापेखाना होता है, उसका नाम प्रत्येक पुस्तक में छपता है, जब तक वे छपी पुस्तकें रहेंगी तब तक उनका नाम भी चला-जायगा और इस में प्राप्त भी बऊत होती है॥ बंबई में साहिब लोगों का रहना नगर के बीचों बीच अधिक है और गोरों की पलटन कुलावे में रहती है॥ फिर हमने पाठशाला अल्पिष्टन साहिब की देखी, वहां एक कमरे में ओसबर साहिब अंग्रेजी पढाते हैं, और उसी के

निकट एक हवेली में बालशास्त्रीजांभेकर पढाते हैं, उन्हों से हमारा मिलाप हुआ सो साहिब और शास्त्रीबावा दोनो बडी कृपा करते रहे, और साहिब ने कुलाबे में लेजाकर यंत्र घर दिखलाया, और वेधशाला में नक्षत्र बेधने की दूरबीन और यंत्र सब दिखाये; फिर आम्बोली में जाकर विलसन साहिब की पाठशाला में लडकियों का पढना देखा और निसब्रट साहिबने उन्हों की परीक्षा ली; उस समय गवरनर साहिब की मेम साहिब थी और भी चार मेम बैठी थीं; उन्हों ने परीक्षा लेते समय हमको भी सत्कार करके बैठाया, और विलसन साहिब, निसबट साहिब, और मिसल साहिब से मिले वे तीनो साहिब मिलने के समय बिद्याही की चर्चा और बड़ी प्रीत रखते रहे, और उन्हों की पाठशाला गढ़ में भी है, वहां बहुत से लड़के भांति २ की बिद्या पढते हैं; निसबट साहिब ने सबों का पढना सुनवाया॥ फिर जहाज बनने का कारखाना देखा उस में अनेक मनुष्य लगते हैं और जहाज बनते हैं, वहां बडी एक खंदक गहरी और चोडी है, उसके तीन ओर चूनेकी भींत है और नदी की तीन ओर द्वार हैं,

उन्हों में बड़े बड़े किवाड हैं, तीनो द्वारों के बीच में तीन जहाज बनते हैं, फिर बन चुकने के पीछे खोलते हैं तो नदी का पानी भीतर आजाता है, तिस से जहाज को नदी में लेजाना सहज होता है ॥ फिर टकसाल जाकर देखी सो उस में धुंवे से एक बडा चक्र फिरता है, उससे सब कमरे में सब यंत्र चलते हैं, उन्हों से सब काम होता है; वह चक्र ऐसी शीघ्रता से चलता है कि दोसौ घोड़ों का बल भी उसकी समान नही होसकता, उसके बल से एक कमरे में चांदी के पत्र तपाकर सात यंत्रों में निकालने से पतले रुपये के दल समान होजाता है; फिर दूसरे कमरे में यंत्र से चांदी के पत्र की रुपये भर टिकडी गोल कटकर गिरती है, और तीसरे कमरे में वे टिकडियां यंत्र में डालने से साफ होकर उन की कोर बनजाती हैं और चोथे कमरे में यंत्र से उन्ही टिकडियों पर सिक्का उछल आता है; और दस बजे से काम का प्रारंभ होता है, और चार बजे तक रहता है; इतने काल में डेढ़ लाख रुपये बनजाते हैं, उस कारखाने में साहिब लोग भी संभालके लिये रहते हैं, और भी बहुत मनुष्य रहते हैं उस टकसाल के यंत्र बहुत बडी विद्या

से बनाये गये हैं ; और बड़े बड़े बिद्यावान् भी देखकर आश्चर्य करते हैं ; देखो हिंदुस्थानी टकसाल में इतना रुपया कहीं नही पड़ता, बिचारो ऐसे यंत्र से कैसी बड़ी लाभ होती है ॥ फिर हमने धर्मशाला देखी, वह एक बडा स्थान बना है, उस में सैंकड़ों गाय, बैल, घोड़े, और कुत्ते आदि मांदे जीव और पखेरू भी रहते हैं ; तिन्हों के खाने को घास दाना आदि मिलता है, और उन्हों की रक्षा अच्छी भांति होती है, जिस किसी के पशु को दुख होता है, वह वहां छोड जाता है; और उस में दीन मनुष्य बहुत रहते हैं, जो कि काल के मारेहुये और देशों से आये हैं उनको भी खाने को मिलता है; उस धर्मशाला में बहुत लोग देते भी हैं जिन में मोतीचंद सेठ अधिक देते हैं॥ फिर सोसईटी की पाठशाला देखी, उस में बहुत लडके अंग्रेजी, मरहटी, और गुजराती पढते हैं ; रसायन शास्त्र, और सिद्ध पदार्थ भी पढते हैं ; और रसायन शास्त्र और सिद्धपदार्थ के उपयोगी यंत्र भी बहुत हैं ; उन यंत्रों से ऐक्सिजन आदि वायु पदार्थ बेल साहिब लडकों को बताते हैं ; वहां बेल साहिब और गंगाधर शास्त्री से मिलाप हुआ उन्हों

ने मैलकम साहिब और अलपिष्टन साहिब के चित्र दिखलाये जो दर्पन में जड़े ऊए बऊत सुंदर हैं। और सोसईटी में पुस्तकें भी बहुत रहती हैं; सोसईटी अर्थात् सभा कई प्रकार की हैं किसी सभा में तो बिद्या की चोकसी रहती है, कि किस भांति से पढ़ानी चाहिये, और कौन कौन सी बिद्या पहले पढानी; और कौन कौन से ग्रंथ किस २ समय में कोनसे आचार्य्यने किये हैं; और किसी २ सभा में देश २ के प्राचीन बीजक जो कि मंदिर आदि स्थानों में लगे ऊए रहते हैं उन्हें मंगाकर उन्हों से अगले राजाओं का ब्योरा जान सकते हैं, और प्रत्येक देश की पुरानी लिखत भी जान सकते हैं; और कई स्थानों में सब देशों के नाना भांति के बीज मंगाकर बिचार करते हैं कि ये कोनसे मसाले के देने से प्रत्येक देश में उपजेंगे; फिर जिस देश में वे बीज, वृक्ष, फल, फूल उपज सकते हैं वहां भेज कर लगवाते हैं, जैसा कि मोरिशश द्वीप के गांड़े हिंदुस्थान में भेजे हैं, सो यहांके गांडों से अच्छे होते हैं, इसी प्रकार की अनेक बातों का बिचार सभा में होता है॥ फिर बालकेश्वर महादेव की जात्रा शिवरात्री के दिवस समुद्र के तीर पर

लगती है सो वह भी देखी ; वहां सहस्रों मनुष्य इकट्ठे होते हैं और महादेव का देवल और कुंड बहुत अच्छा बना हुआ है महा लक्ष्मी का भी देवल समुद्र तीर बना हुआ है, वहां भी जाचा लगती है और महा लक्ष्मी के देवल के निकट और पांच मंदिर विष्णु, शिव, सूर्य, देवी, गणेश के धांकजी सेठ के बनवाये हुए बहुत सुन्दर हैं; धांकजी सेठ बड़ा धनाढ्य है और अति प्रतिष्ठित ; आगे गायकवाड़ की दिवानगीरी भी उसने की है अब उसे वरसवेंदिन तीन सहस्र की पिन्सन मिलती है; उन्हों की कोठी अति शोभायमान है उनसे मिलाप हुआ, तब बड़ी प्रीत की और उनके पुराणे गोपाल शास्त्री से भी मिलाप हुआ, और एक नूरोजी फारसी से भी मिले वह बरन साहिब के साथ पंजाब, मुलतान, काबुल आदि देशों को गया था; उन्होंने ३५ अचांशउत्तर तक का बर्णन किया है और दोस्त मोहम्मद के राज का भी बर्णन लिखा है॥ और एक विलायती मुसलमान से हमने मिसर के नगरों का समाचार सुना, और एक दिन जीजी भाई जमसेठ फा-रसी की कोठी देखी उस में नव लाख की सामग्री चित्र आदि की अद्भुत देखने में आई; जमसेठजीने धर्मार्थ

ओषधों के लिये एक लाख रुपया दिया है॥ और एक दिन समुद्र में तीन कोस गारापुरी नाम एक द्वीप छोटासा है, सो जाकर देखा कि वहां पहाड़ में दालान और मंदिर बने हुए हैं; और बहुत प्राचीन स्थान जाना जाता है, वहां बड़ी २ मूरत पत्थर की बनी हुई हैं, वे जैनी स्थान हैं ऐसा लोग कहते हैं॥ यह देख फिर बंदर बोट में बैठ बंबई आन पहुंचे, फिर एक दिन सोसईटी की पाठशाला में धर्मार्थ दवाईखाने की चोकसी के लिये सभा हुई तब गवर्नर फेरीस साहिब बहादुर आकर मुख्य स्थान पर बैठे, और कौंसलवाले साहिब और गवरनर के मुसाहिब और सेना के साहिब जनरल करनैल आदि मिलकर १६ और थे, और फारसी साहूकार १२ थे और किरानी भी थे, और बाल शास्त्री और गंगाधर शास्त्री पटबर्धन के लड़के थे आपा साहिब थे और हम भी यह लीला देखने को गये थे, सो जाकर देखी कि प्रथमं सेक्रिटरी ने दवाई खाने की पुस्तक सुनाई उस से जान पड़ा कि यूरोपीय डाकतर से बहुत रोगी अच्छे भये और बहुतसे दीन लोगों को औषध बिन मोल की मिलती है

यह रपोट सुनकर सब साहिब लोगोंने अपना अपना अनुमोदन चिठ्ठी में खड़े होकर बांच सुनाया फिर गवर्नर साहिबने अपना हर्ष खड़े होकर प्रगट किया, कि हमको बड़ी प्रसन्नता हुई; और सब लोग इस दवाई खाने में अपनी सामर्थ के अनुसार सहा- यता और चोकसी करते हैं, और जीजी भाई जम सेठजी ने लाख रुपये दिये और विलायत को रपोट की है सो वहां से भी मंजूरी आवेगी ऐसा कहकर गवर्नर साहिब बैठे; फिर सभाने बिदापाई उस समय सबों की भेट होने में आई, हमारी भी भेट गवर्नर साहिब से ऊई, उन्हें ने कृपाकरके सब कुशल वर्तमान पूछकर बिलकिन्सन् साहिब बहाबदुरजी के समाचार पूछे और सिहोर की पाठशाला और सब पंडित मंडली के समाचार सुब्बाजो बापू शास्त्री के वर्तमान समेत सुनकर बऊत प्रसन्न ऊए, और कोठी पर बुलाया तब हम आज्ञां के अनुसार एक दिन कोठी पर गये गवर्नर साहिबने रात के नो बजे पर बुलाकर हमको दुरबीन दिखलाई उस में बृहस्पति के चार चंद्र और शनि का वेष्टन और चंद्र यथा स्थित दृष्ट आये, और हमारा चंद्र मंडल भी अद्भुत दीख पड़ा ये सब बातें

दो घंटे तक करते रहे, वहां और भी चार साहिब मुसाहब लोग थे, उन्हों से भी मिलाप हुआ और मेम साहिब भी थीं सबोंने बड़ी कृपा से सनमान किया; और वहां हरीकेशवजी से भेट हुई जिन्हों ने रसायन शास्त्र और सिद्ध पदार्थ विज्ञान का उलथा मरहटी में किया है॥ फिर गवर्नर साहिब ने आज्ञा दी कि बंबई में रहकर सब विद्या स्थान, और यंत्र आदि देखो, ऐसा कह बिदादी॥ फिर एक दिन बिनायक शास्त्री और हम करनेल कंडी साहिब के यहां गये उन्हों की भेट होने से बड़ी प्रसन्नता हुई; साहिब बड़े विद्यावान् हैं और प्रत्येक देश की बोली जानते हैं, और देश २ की बोली सीखनेवाले साहिबलोगों की परीक्षा लेते हैं; फिर एक दिन कालेज में धुंवे की गाड़ी का आकार बेल साहिबने चला कर बतलाया, उस साहिबने उस गाढ़ी की पेटी में पानी भर नीचे आग की बत्ती लगाई, उसमें पानी बाफ होकर गाडी के आगू की ओर एक नली रहती है उसमें होकर चाक की ओर दो नली जाती हैं उन में बाफ पहुंच कर पेष्टन को बाहिर भीतर करता है, उस बाफ के बल से पेष्टन के हलाने से चाक को गत होती है

इससे गाड़ी बक़त शीघ्र चलती है, वे साहिब बहुत ढील तक कमरे में गाडी इधर से उधर चलाते रहे उसे देखने से बड़ा अद्भुत कर्म जान पड़ा, धुंवे की गाड़ी से बड़ा उपकार होता है; एक धुंवे की गाढ़ी के पीछे पंद्रह बीस गाड़ी पर्य्यंत बांधते हैं, सो एक धुंवे की गाढ़ी के चलने से पीछे बंधी ऊई सब गाढ़ी एक घंटे में पंद्रह बीस मइल पर्य्यन्त जाती हैं, जिन्हों से देश में शीघ्र पहुंचने सकता है; देखो इससे कैसा उपकार होता है जिस देश में अकाल पड़ता है उस देश में शीघ्र अन्न पऊंचने से वहां सस्ता होता है; धुवें की गाड़ी के चलने के लिये पहले लोहे की सड़क बनवानी पड़ती है जिससे बीच में कुछ रोक न होकर सीधी चलीजाती हैं; धुवें की गाड़ी का प्रबंध हिंदुस्थान में होवे तो बडा फलहो ॥ फिर धुवें का जहाज भी जाकर देखा वेल साहिब ने निचलेखन में लेजाकर वाफ का कारखाना दिखलाया, उस में दो कोठी पानी से भरी रहती हैं, उन्हों के नीचे पत्थर के कोयले जलते हैं, उस से पानी तता हो वाफ होकर एक बडी नली में जाता है, फिर गाडी की भांति दो नली में होकर चाककी ओर

जाता है, उस से चाककी गति होकर जहाज चलता है, और भी बहुत सामा पीतल की नली पेच आदि अद्भुत रहते हैं, एक नली उस में पानी आने की रहती है, और एक नली थोडी या अधिक बाफ करने के लिये रहती है, और एक ऐसी है कि उस में होकर वही बाफ मीठापानी हो जाता है, सो वही पानी सब जहाजी लोग पीते हैं, और उस का खार निकल नेके लिये नीचे एक मोरी रहती है, उस से सब निकल निर्मल पानी रहजाता है, एक नली ऐसी रहती है, कि जिस समय शत्रु कोई जहाज पर बढकर आया तो उस पर तत्ता पानी डालते हैं, तिससे जलकर सब भाग जाते हैं, ऐसे बहुत चक्र यंत्र रहते हैं, और ऊपर कंपास घड़ी रहती है और एक चक्र ऐसा होता है कि जिस के तनक फिरने से जहाज सब फिर जाता है; धुंवे के जहाज के चलने में बायु का कुछ प्रयोजन नही रहता, बादवान के जहाज बायु के रुख से शीघ्र जाते हैं परन्तु धुंवे के जहाज को उलटी बायु होवे तो भी कुछ रोक नही होती और बहुत शीघ्र भी जाता है इस- लिये इस से बडा उपकार होता है और एक

लिवर पुल के जहाज पर भी जा कर देखा कि उस जहाज के तीन खन हैं, और कंपास आदि बड़त यंत्र हैं, लान्किष्टर उसका नाम था चार तोप उस पर थीं उसी पर मेजर विन्फिल्ड साहिब चढ़कर विलायत गये अब हम भी पूना सितारा देखने जाते हैं कृपा विशेष २ रखते रहना १६ फरवरी संवत् १८३९ ईसवी॥

॥ तीसरा पत्र ॥

॥ सर्वोपमा संपन्न राज्यमान्य राजश्री शास्त्री ॥

॥ सुव्वाजीवापूसाहिब जी ॥

योग्य लिखी पूना से सेवक रत्नेश्वर इत अनेक नमस्कार बंचना और इहां हम प्रसन्न हैं आप के समाचार आये सो बांच कर परम आनंद ऊआ आपने लिखा कि पूना की पाठशाला के समाचार लिखना, और सितारा पंडर पुर आदि नगर जो देखने में आये होंय तो उनका भी वर्णन करना सो आप के लिखने के अनुसार सब समाचार लिखते हैं; और बंबई के वर्त्तमान सब ओंकार भट्टजी के नाम

के पेच से जानलिये होंगे ॥ आगे हम वहां से चलकर बंदर बोट में बैठ पनवेली बंदर में उतर फिर फफोली का घाट चढकर कोक नदी में पहुंचे; मार्ग में कारला नाम के गांव के निकट आध कोस उत्तर की ओर पहाड में एक गुफा प्राचीन बनी ऊई है, उस में ३६ खंभ हैं और पत्थर की मूर्त जैन मत की सी हैं और हाथी घोड़े पत्थर के बने ऊए बऊत हैं; और दो गुफा तीन खनी हैं, उन में प्राचीन अक्षर लिखे हैं उनकी प्रति विलसन् साहिब लेगये हैं, वे कहते थे कि यह तीन सहस्र तीनसौ बरस की है यह देख चोंचवड के गनेशजी के दरशन करते ऊए पूना आये; उस दिन क्यांडी साहिब बहादुरजी से भेट ऊई, साहिबने किसी दिन पाठशाला के गुरु लोगों को वुलाके मेरे लिये सिद्दांत के विद्यार्थियों की परीक्षा लेने को सभा बिश्राम बाग में की, वहां हमको भी संग लेगये थे; वहां क्यांडी साहिब ओर्लबरं साहिब और हेल साहिब भी थे, पंडितों में रामचंद्र शास्त्री, विष्णु शास्त्री, नृसिंहाचार्य, राम शास्त्री, नारायण शास्त्री, रघुनाथ शास्त्री, और बालकृष्ण जोसी संगमेश्वरकर त्र्यंबक जोसी और अन्य भी सभावाले

थे; और परीक्षा देनेवाले विद्यार्थी शंकर जोसी, दादा जोसी, दाजी जोसी, विष्णु जोसी, बाल जोसी, बिनायक जोसी, रामचंद्र जोसी थे, उन्होंने सिद्धांत शिरोमणि और लीलावती में परीक्षा दी, सब देखने में आई॥ और इस पाठशाला में जो गुरु उपगुरु हैं तिन्हों के नाम॥

शास्त्रनाम	गुरुनाम	उपगुरुनाम
न्याय	रघुनाथशास्त्री	नृसिंहाचार्य
व्याकरण	चिंतामणिशास्त्री	ढोढूशास्त्री
ज्योतिष	दादाजोसी	महादेवजोसी
काव्यालंकार	मोरूशास्त्री बासुदेवशास्त्री	चिन्ताचार्य
धर्मशास्त्र	सखारामशास्त्री	बासुदेवाचार्य
बैद्यक	नारायणशास्त्री	बालकृष्णशास्त्री

इन सब पंडितों से हमारी भेट हुई, और मरहटी शाला के गुरु, दिनकरपंथ, दाजीबा, पांडोबा, कुसाबा इन्हों की भी पाठशाला के लड़कों की परीक्षा देखने में आई; पांडोबा गुरु बहुत गुणवान् हैं, और उनकी त्रिकोण मिती भी पढ़ी हुई है; पांडोबा गुरु की पाठशाला के लड़कों ने हिसाब, बीज, मरहटी

व्याकरण में परीक्षा अच्छी दी, और रेखा गणित के कई क्षेत्रों की उपपत्ति भी कहते हैं अंग्रेजी शाला के गुरु स्‌डेल साहिब ने बुलाकर वाताकर्षण यंत्र जिसे अंग्रेजी में एरपंप कहते हैं उस के मुख पर कांच का बरतन रक्खा और वायु निकाली तो बरतन बहुत बल करने से भी न निकला; फिर पेंच फेरकर भीतर वायु भरी तो बरतन सहज में निकला, फिर हमने उसके मुख पर हाथ रक्खा और वायु निकाली, तो हमारा हाथ भी जमगया, हमने बहुतेरा उठाना चाहा, परंतु बालमात्र भी न हटा, फिर वायु यंत्र में भरदी तो सहज में हाथ अलग हुआ, ऐसे कई भांति के बरतन रखकर देखा, फिर तत्ता पानी सीसी में भरकर ऊपर रक्खा, और वायु निकाली तो पानी बाफ होकर ऊपर चढनेलगा, और छोटासा फुवारा मूह पर रखकर वायु निकाली, तो वह भी छूटने लगा; ऐसे कई भांति के अद्भुत काम दृष्ट में आये, और पानी का भी पंप देखा, और फिर फुवारा भी देखा, और साहिबने ऐक्‌सजन, हैड्रोजन, और नैटोजन, ये पदार्थ यंत्र से करके बतलाये, नैट्रोजन ऐक्‌सजन मूलपदार्थ वायु हैं और ऐक्‌सजन जीवन मूलहै; नैट्रो

सपाटू के पहाड़ पर हवा खाने को जाते हैं, तैसे दक्षिण में महाबलेश्वर के पहाड़ पर जाते हैं, और मालकिम साहिब ने बिचार करके यह स्थान बसाया है ॥ फिर घाट उतर कर वेणा नदी के पार हो सितारे पहुंचे सितारा नगर बहुत अच्छा है, और राज वाड़ा भी अच्छा बंधा है; यहां राघवेंद्राचार्य बड़े पंडित हैं, न्याय व्याकरण में इन्होंके समान दूसरा पंडित दक्षिण में नही है, हमारा इन्हों से मिलाप हुआ और राजा साहिब से भी भेट हुई, सो सिहोर की पाठशाला का बर्णन सुनकर राजा साहिब बहुत प्रसन्न हुए और सिहोर के पंडित लोगों की बिद्या के समाचार भी राघवेंद्राचार्य सुनकर अति मग- नानंद भये और राजासाहिब ने विल्किन्सन् साहिब बहादुरजी की कुशल पूर्बक बिद्या सबंधी कीर्त्ति सुनकर आनंद पाय अपने पंडितों से भेट करवाई और पाठशाला के लड़कों की परीक्षा दिखवाई, और चपरासी संग देकर जलमंदिर और दुर्ग भी दिख- वाया; जल मंदिर की शोभा बहुत सुंदर है, चारों ओर पानी फिरा हुआ है, और फुवारे बनेहुवे हैं एक ओर छोटासा तड़ाग और जल मंदिर के

एक कमरे में बड़े बड़े उमरावों की तसवीर लगी हुई हैं; और एक कमरे में शीशे लगे हुए हैं और गढ़ पहाड़ पर बना हुआ है; उसके भीतर देवी का मंदिर बना है, और राजा के रहने का मंदिर बना है और सब टांके पानी के भरे हुए देखे और तात्यादीक्षित और महादेव दीक्षित सिद्धांती गोपाल दीक्षित सिद्धांती और रामचंद्र शास्त्री इन सब से भेट हुई, और उन्होंने यंत्रराज खगोल गोलानंद यंत्र बतलाये सो देखे और महादेव दीक्षित ने लिखा था सो भी सुना फिर पाठशाला के पंडितों ने अपने २ लड़कों की परीक्षा दिखवाई और गुरुओं में मुख्य माधवराव मुनशी बहुत बड़े गुणवान् हैं, मरहटी भाषा में कविता बहुत अच्छी करते हैं, और पारसी में बहुत कुशल हैं॥

पाठशालानाम	गुरुनाम
हिसावकीशाला	माधवरावमुनशी
ज्योतिषशाला	हरीजोशी
वैद्यशाला	दाजी वल्लभ
रमलशाला	कृष्णभट्ट
हिन्दुस्थानीशाला	चिंतामणिभट्ट
पारसी आदि	बाबूरावमुनशी

अंग्रेजीशाला	नृसिंहरावमुनशी
नाटक काव्यालंकार	भालचंद्रशास्त्री
अरबी	मिरज़ा गुलामअली
पारसीबेत	मीर अहमदअली

इन सब लोगों से भेट ऊई, और सब प्रसन्न भये यहां अंग्रेजी पलटन की छावनी है, और डाक्तर यंग साहिब से मिलाप भया और राजा साहिब ने प्रसन्न होकर हमारा बऊत मान किया वस्त्रदिये, सो लेकर फिर मावली स्थान में, जाकर कृष्णावेण्या के संगम में स्नान किया, वहां बऊत मंदिर बने हैं, जैसे वाईचेत्र से कृष्णाजी के तट पर लचावधि रुपये लगाकर घाट और देवल बांधे हैं, और धर्म पुरी गंगा पुरी में हवेलियां बऊत सी बनाकर ब्राह्मणों को दी हैं, और कृष्णा का उत्सव जैसा वहां करते हैं तैसा ही सब यहां भी होता है; कन्यागत में कृष्णाजी पर बडा मेला भरता है, सो देख फिर पंडर पुरको गये और वहां देखा कि चंद्रभागा नदी लहरे लेरही है, और पंडरीनाथजी का देवल बऊत अच्छा बनाऊवा है, और देवल के घेरे के भीतर और आठ देवल बने हैं, और देवल में सभामंडप बऊत हैं, और यहां सहस्रों

याची नित आते हैं, और बहुत से साधुलोग भजन करते हैं यहां चंदूलाल की ओर से हाथी रहते हैं और अन्नक्षेत्र भी हैं और सिंध्या और हुल्कर आदि बडे २ मनुष्यों की ओर से बाड़े बंधे हैं, अहिल्या बाई और रामचंद्र का देवल बहुत अच्छा बनाहुआ है; पंडरपुर में उनके कंबल बहुत अच्छे मिलते हैं; हम पंडरीनाथ के दर्शन करके चले, शंभू महादेव की याचा करते हुए पलटन होकर जाजोरी आये; शंभू महादेव एक बड़े पहाड़ पर विराजमान हैं, और चैची पूना की बडी जाचा लगती है, और पलटन में एक रामचंद्र का मंदिर निमालकर देस-मुख का बनवाया हुआ शक १६९९ का बहुत सुंदर है, जिसमें सहस्रों रुपये का काम है; और जा-जोरी में खंडेराव का स्थान एक ऊंचे पर बना हुआ है, ऊपर जाने को चारसै सीड़ी चढनी पड़ती हैं और नो द्वार हैं, और ऊपर अहिल्या बाई की बनबाई धर्मशाला और छारदीवाली हैं और देवल बंधा है; उसमें १२०३ शक लिखे हैं, और खंडेराव की पुरानी मूर्ति पाषाण की है, और नवीन हुल्कर आदि सरदारों की सोने चांदी की हैं, और नीचे

टेकरी के वडा गांव बसता है, और अहिल्याबाईने दो तडाग बहुत गहरे खुदवाये हैं जिन्हों में निर्मल नीर भरे हुए हैं, और एक मंदिर में यशवंतराव का चित्र और अहिल्या बाई का भी है, वह मंदिर शक १६७७ का बना हुआ है; खंडेराव के यहां मुरलि आदि बाद्या बहुत हैं; जिस किसी के बालक नही होता है वह मानता करता है कि जो मेरे बालक होगा तो प्रथम बालक को मैं खंडेराव के यहां छोड़ जाऊंगा, फिर उसी भांति करता है और उन्ही बालकों को बाद्या बोलते हैं वे वाद्या भीख मांग कर पेट भरते हैं, यह सब देख पूना आये अब "नगर की पाठशाला देख औरंगाबाद हो दौलताबाद का गढ देखकर बेरूल देखते हुए अंजटेका घाट उतर शीघ्र आपके पास आते हैं छपा रखना ॥ २८ मई संवत १८३९ ईसवी ॥

॥ स्वस्ति श्रीमत्समस्त गुणगण मंडित ॥

॥ राजमान्य राजश्री चंपारामजी ॥

योग्य लिखी बुढ़ान पुर से रत्नेश्वर का नमस्कार बंचना आगे हम प्रसन्न हैं, आपकी प्रसन्नता के समाचार आये सो बांचकर परम आनंद ज़आ; आपने पत्र भेजा सो पाया उस में लिखा है कि तुम पूना से चलकर आओगे तब मार्ग में जो बड़े नगर मिलें उनका वर्णन करना और जो नामी स्थान विद्यालय देखने में आवें या और भले मनुष्यों की भेट हो उनके भी समाचार लिखना सो आप के कहने के अनुसार सब वृत्तांत लिखते हैं ॥ आगे हम पूना से चलकर मार्ग में भीमा नदी उतर घोडे नदी की छावनी देखते ज़ए अहमद नगर पज़ंचे; यह नगर अहमद शाह बादशाह का बसाया ज़आ है, और गढ़ वहां का बड़ा दृढ़, नगर बज़त कालके उजड़ हो गया था, परंतु अब अच्छा बसता जाता है, और पुराने स्थान बादशाही समय के बड़े २ लोगों के बने हुए हैं और यहां मसजिद बज़त हैं, पानी का नल है, और यहां सरकारी

तीन पाठशाला मरहटी की हैं॥ लड़कों की परीक्षा ली तो जाना कि वे हिसाब अच्छा करते हैं, और यहां के गुरु लोगों का नाम, रामकृष्ण, सदाशिव, मोरो, रघुनाथ काले, और चिंतामणि, सदाशिव है; और गोविंद शास्त्री ओलीय अदालत के शास्त्री हैं और बक्रत गुणवान् और योग्य राघोपंथ गोगटे नाजर अदालत के हैं, इन सबों से भेट ऊई; नगर में आलमगीर बादशाह की कबर है, और बालटिन साहिब पादरी से मिलाप ऊआ उन्होंने दूरबीन दिखलाई; और बेफ साहिब से भी भेट ऊई; यहां बंदी यह देखा जिस में बंधुवे लोगों से कपड़े बुनवाते हैं और भांति २ की वस्तु कराते हैं; फिर वहां से चल टोंके का घाट और गोदावरी गंगा उतर औरंगाबाद पऊंचे, जातेही करनैल साहिब से भेट हुई और अजीटन विलसन् साहिब से भी; फिर नगर देखा सो बहुत लंबा है, परंतु ऊजड़ अधिक है, और नदी तीर पनचक्की चलती है, उस से बक्रत आटा पिसता है उसके निकट आलमगीर बादशाह के गुरु की कबर और मसजिद है, और बाग भी वृक्षों से

परिपूर्ण हैं; ओरंगाबाद ओरंगेज बादशाह का बसाया है इसमें बडे बड़े स्थान लाखों रुपये की लागत के टूटे पड़े हैं, और नदी के तीर बाग में आलमगीर बादशाह की बेगम राबी अरदुरानी की कबर बनी हुई है, और बड़ा मुकरबा है, जिस में मरमर पत्थर लगा ऊआ है, उसी पत्थर की बऊत महीन जालियां खुदी ऊई हैं, और मुकरबेके वहां जानेको २५ सीढ़ी चढ़नी पड़ती हैं, ऊपर चारों ओर चार मस्जिद और ४० चौक हैं; द्वार बऊत मनोहर बने ऊए हैं; और आठ हौद और फुवारे बऊत हैं, कबर तले के घर में हैं; वहां शुक्रवार के दिन यात्रा लगती है॥ फिर वहां से तीन कोस दौलताबाद गये वहां गढ़ पहाड़ पर बहुत ऊंचा बना हुआ है, उसके ऊपर राजाने कई स्थान में पत्थर फोड़कर मार्ग किया है पर अंधेरा रहता है, वहां मसाल के उजाले से जाते हैं; ऊपर एक मुकरबा बंनाहुआ है तिसके ऊपर बारह दरी बनी हुई है, शिखर के ऊपर वालहंसार नाम की एक तोप है जो बारह हाथ लंबी है, दूसरे बुर्ज पर एक पहाड़ नाम तोप है इसी भांति तीसरे बुर्ज पर भी है; पानी टांके का

भरा हुआ है, एक गुफा में महादेव हैं, नीचे एक ऊंचा मुनारा बंधा है; फिर गढ़ के चहुंओर बंद पानी से भरा हुआ है और गढ़ के नीचे से ऊपर तक एकही पत्थर दिखाई देता है; नगर नीचे थोड़ा बसता है, आगे उसे देवगढ़ कहते थे, औरंगजेबने दौलताबाद नाम रक्खा है; फिर वहां से चल कागदी पुर देखा वहां कागद बहुत बनाते हैं, और बहुत अच्छे बनते हैं, तिस पीछे रोजा गांव देखा सो मुसलमानी बस्ती और उन की पन्यभूमि है, वहां और भी एक बादशाही कबर है वह गांव बड़ा भारी है कि उसके चारोंओर कोट बंधे हुए हैं; गांव के बाहिर जरजरी पीर का बड़ा स्थान है, यह देख फिर बेरूल को गये वहां शिवालय तीर्थ है, और अहिल्या बाई ने कुंड १६९२ के शक में बनवाया है और शिवालय महादेव का अहिल्या बाई की सास ने बनवाया है, उस में सहस्रों रुपये का काम हुआ है तहां से चलकर बेरूल गांव देखा, आगे वह बड़ा नगर होगा अब उजड़ है, सो थोड़ा बसता है और थोड़ी दूर पर पहाड़ के बीच स्थानों में बहुत गुफा बनी हैं तिन में सात स्थान तो बहुत भारी नामी

हैं उन्हों में दोखनी, तीनखनी, चैाखनी, पंचखनी बहुत जगह हैं, श्रोर इंद्र की सभा बनीहुई है, तहां सैंकड़ों मूर्तें पत्थर की हैं, श्रोर हाथी घोड़े अनेक; दालान श्रोर खनोंका प्रमान तो बहुत होता है, उस पहाड़ पर श्रोर दो स्थान हैं जहां महादेव हैं, श्रोर किसी स्थान में जैन सरीखी मूर्त्ति हैं, वहां पानी बहुत जगह है किसी स्थान में चित्र हुए हैं; हमने पांच स्थान में गुफा देखीं, परंतु ऐसी रचना कहीं देखने में न आई; यह सब देख वहां से चल पूर्णं नदी उतर अजंटेके घाटे पर आये; अजंटा गांव अच्छा श्रोर बहुत सुंदर है, श्रोर गढ दृढ, नदी पर पक्का पुल है, श्रोर बादशाही सराय बनी हुई हैं, एक बडी खंदक पहाड़ की चलीगई है, वहां भी बहुत रमणीक गुफा है, श्रोर टोंके गांव से लगाकर अजटे तक हैदराबाद का राज मार्ग मिला सो, स्त्ज उजड़ बहुत हो रहा है, प्रजा बहुत दुखी हैं; फिर वहां से घाट उतर दूसरो पूर्णवातापी उतर बुढाने पुर पहुंचे॥ हमने देखा कि मार्ग में बटोहियों को पैसों के लिये बडी कठिनाई होती है, क्योंकि एक गांव का पैसा दूसरे गांव में नहीं चलसकता है; श्रोर कई स्थान का एक

राजा होकर भी पैसा दूसरे गांव में नही चलता, और जो एक स्थान का पैसा दूसरे स्थान में चलाते हैं तो वह पोन पैसे में चलता है, और किसी गांव में जहां कि दुकान नही है, वहां और स्थान का पैसा नही लेते तो बटोहियों को पैसा होते हुए भी भूखा रहने पडता है; फिर दो पैसे खरचने के लिये भी रुपया भुनाना पड़ता है, और दो पैसे तो खरच हुए शेष बचे सो संग लेजाने पडते हैं; और आगे के स्थान में पांच दमड़ी या पौन पैसे में चलते हैं; ऐसे रुपये के बारह आने रहते हैं इसलिये सब राजाओं को योग्य है कि सब बिचार करके एकही सिक्के को सब स्थान में चलावें जैसा कि कंपनी के राज्य में चलता है, इस से बटोहियों को मार्ग में बड़ा सुख है; जो कदापि कहोगे कि अपना-अपना सिक्का सबही चलाते हैं तो रुपयों का सिक्का चलताही है, और रुपयों में भी ये खराबी हैं; परंतु अपना अपना नाम रखना प्रत्येक को आवश्यक है और ऐसा बिचार होवे तो भला कि अपना २ नाम सिक्के में रहने दें परंतु आपस में बट्टा लगा कर बराबर चलावें जैसा कि इंदोरी सिक्का हुल्कर

का है और उज्जैनी सिक्का सिंधे का है, ये दोनो हाली रुपये बराबर में चलते हैं ऐसा चलन होने से बटोहि-यों को और प्रजा को बहुत सुख और भला है॥ अब शीघ्र हरदे होकर हडियें निवार के घाट नर्मदा उतर सिद्धेश्वर महादेव के दर्शन कर आपके पास आते हैं छपा अधिक २ रखते रहना संवत् १८३९ ईसवी॥

इति पत्र ॥लिका समाप्ता॥